साहित्य दिग्दर्शिका

मासिक ई-पत्रिका (सितम्बर-२४)









प्रस्तुति

गुरुकुल अखण्ड भारत



ISBN978-81-964040-9-3





साहित्य दिग्दर्शिका

मासिक ई-पत्रिका सितम्बर-2024

प्रकाशक

गुरूकुल अखण्ड भारत

ISBN : 978-81-964040-9-3

Editor : Anuj Pratap Singh Suryavanshi
Designer : Anuj Pratap Singh Suryavanshi & Ram Nivash Kashyap
Coordinator : “Arkvanshi” Pankaj Singh Dinkar
Publisher : Gurukul Akhand Bharat
Address : H.No. 23, Vill Sapaha Post Sondha, Tehsil Puranpur
Dist. Pilibhit U.P. (242123)
Contact : +91 7599289803
E-Mail : info.gurukulakhandbharat@gmail.com
Website : www.gurukulakhandbharat.org

मूल्य :– निशुल्क







अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क

साहित्य दिग्दर्शिका

प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेबल ट्रस्ट (पंजी०)







प्रेम कंचन सा शुद्ध, निर्मल,
मन को छूता, सदा अविरल।
जैसे गंगा का पावन जल,
वैसा ही प्रेम निश्छल, अटल।

न इसमें छल, न कोई भेद,
सत्य पर टिका, अडिग, अचेत।
हर रिश्ते को मधुर बनाता,
कभी न किसी से कुछ चाहता।

न स्वार्थ इसमें, न अभिमान,
बस सेवा और त्याग महान।
हर बंधन को मुक्त कराता,
मन में प्रेम का दीप जलाता।

कंचन सा जो प्रेम हो पावन,
उसमें बसता सत्य का ध्यावन।
कभी न मुरझाए, न टूटे,
हर संकट में साथ में छूटे।

प्रेम नहीं कोई वस्तु या धन,
यह है आत्मा का अमूल्य रत्न।
जो इसे समझे, वही धनी,
प्रेम से जीवन होता उज्ज्वल, सनी।

तो आओ, प्रेम को अपनाएं,
कंचन सा शुद्ध इसे बनाएं।
मन, वचन, और कर्म से पावन,
प्रेम ही है सच्चा जीवन साधन।

--अनुज प्रताप सिंह ''सूर्यवंशी''
पूरनपुर, पीलीभीत (उ०प्र०)





अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क

साहित्य दिग्दर्शिका

प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेवल ट्रस्ट (पंजी०)

हर शख्स लुटेरा निकला,
अपना जिसे माना मैने,
जज़्बातो की इस लड़ाई में,
खुद को तन्हा जाना मैने।

जब खून के रिश्ते टूट गए,
जब अपने मुझको लूट गए,
खुद की परछाई से भी अब मैं दूर हुई,
देखा उसका भी साथ छोड़ जाना मैने।

इस हाड़ मांस के पुतले में,
अब इतनी ताकत बची नही,
रिश्तों के पीछे फिर भागू,
जब जीवन का न देखा ठिकाना मैने

एक बात समझ आई है अब
तू आया है अकेला और जायेगा भी,
इस जीवन मृत्य की मध्यस्ता में,
कई बार खुद को मृत पाया मैने।।



पूनम सिंह भदौरिया
दिल्ली



अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क

साहित्य दिग्दर्शिका

प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेबल ट्रस्ट (पंजी०)



भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को
श्री गणेश ने था जन्म लिया।
आज के ही दिन श्री गणेश ने
महाभारत निखना शुरू किया।

श्री गणेश को लिखने में महाभारत,
दस दिन का था समय लगा।

एक ही मुद्रा में बैठकर
लिखने के कारण
श्री गणेश जड़वत हुए।
कर पूर्ण संपूर्ण कथा,
तनिक नहीं बिचलित हुए।

धूल-मिट्टी की चादर ओढ़े,
दस दिन उपरांत नदी स्नान किया।
श्री गणेश स्नान का दिन
अंनत चतुदर्शी नाम से प्रसिद्ध हुआ।

माँ पार्वती के लाड़ले हैं,
मोदक इनका भोग।
श्री गणेश के पूजन से,
मिट जायें सारे रोग।

श्री गणेश का जन्मदिन
उत्साह पूर्वक मनायें आज।
श्री गणेश की कृपा से ही
सब पूरण होंगे काज।



कंचन मिश्रा
शाहजहाँपुर, उ.प्र.




अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क

साहित्य दिग्दर्शिका

प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेबल ट्रस्ट (पंजी०)




जन-जन प्रेरक बापू नाम।

रघुपति राघव राजा राम,
पतित पावन सीता राम--२
अमर सदा गाँधी का नाम,
जपते राम अहिंसा काम-२
रघुपति राघव--------

सत्य, धैर्य,प्रिय राम का नाम,
व्यक्तित्व रहा चलता अविराम।
सत्याग्रह आंदोलन ठान,
आजाद कराया हिन्दुस्तान ,
जीवन रहा जेल के नाम ,
जन-जन प्रेरक बापू नाम।
बापू जपते राम का नाम,
जीवन पर्यन्त अहिंसा काम।
रघुपति राघव------

मीठी मुस्कान बिना हथियार,
अंग्रेजों पर घातक वार ,
मुश्किल सहना था हर वार,
गया अहिंसा से सब हार।
स्वतंत्रता संग्राम की, की अगुवाई,
दुश्मन से अपनी लोहा मनवाई,
सब कुछ किया देश के नाम,
जीवन पर्यन्त अहिंसा काम।
रघुपति राघव------२

प्रतिभा पाण्डेय ष्प्रतिष
चेन्नई





स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत, शिक्षित भारत, समृद्ध भारत



माँ शैलपुत्री

प्रथम



गुरुकुल अखण्ड भारत ||  917599289803





कला के लिए
आवश्यकता बुद्धि और हृदय की है,
रुपये की कदापि नहीं.

\- महात्मा गांधी

मुझे सूखी हुई स्याही से
कविताएं लिखना पसंद हैं
कलम टूटी हो गर
तो और भी अच्छा पन्ना फट जाए
लिखते हुए उस हर्फ़ को
इससे खूबसूरत कुछ न होगा

मेरे लिए सबसे ज़रूरी
जो होगा वो लिखना होगा
जटिलताओं को सरलता से
संघर्ष को रक्त से
पसीने से पानी से
सफेद पड़े चेहरे से
हांडमास से बाहर आती हड्डियों से

लिखना ज़रूरी होगा
हर तरह से

मेरा चिता पर बैठकर
जलते रहने तक
मैं वो सब लिखना चाहूंगा
जो मैंने मरकर जिया है
और जीकर मरा है।



-- मुकेश चंचल



साहित्य दिग्दर्शिका



अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क

प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेबल ट्रस्ट (पंजी०)





हार नही मानी जीवन से

बचपन से ही प्रखर बुद्धि थी,
कुल का एक सितारा था।
हार नहीं मानी जीवन से,
कोई नही सहारा था।

दृष्टि-दोष हो गया अचानक,
सूना यह संसार हुआ।
मात-पिता के पलते सपने,
सचमुच कष्ट अपार हुआ।

पर साहस ने हार न मानी,
मन में दृढ़ संकल्प लिया।
दव्य षदिनेशष खिलेगा एक दिन,
ऐसा एक विकल्प लिया।

मेहनत तेरी रंग लाएगी,
मन में यह विश्वास जगा।
दृढ़ इच्छा और अंतर्मन से,
दोष-दृष्टि वह दूर भगा।

संकल्पित तब सच्चे मन से,
कुछ करने को कदम रखा।
जीवन की लाखों बाधाएं,
दुख-सुख के सब स्वाद चखा।

आज उगा वह षदिनकरष बनकर,
दिव्य रूप आकार लिया।
“तेजाराम-कावरी” उपवन को,
सच में साकार किया।।

पंकज सिंह दिनकर (अर्कवंशी)
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क

शुभ नवरात्री

साहित्य दिग्दर्शिका

प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेबल ट्रस्ट (पंजी०)



श्री शिव-शक्ति चालीसा

दोहा

अति प्रिय पावन नाम हैं,ब्रह्मा विष्णु महेश।
तीन देव रक्षा करें,गणपति हरें कलेश।।१
दया-सिन्धु नटराज की,पद-रज भाल लगाय।
विनय करूँ कर जोरि के,चरनन शीश नवाय।।२

चौपाई

नाथ शक्ति नव सिरजन हारे। आदियोगि बहु नाम तुम्हारे।।
हाथ पिनाक त्रिलोचन धारी। सुजस सकल गावैं नर-नारी।।
कर डमरू सँग नंदी भाए। अंग-अंग प्रभु भस्म रमाए।।
भूषन बिच्छु नागमणि माला। वसन विभूषित कटि मृगछाला।।
शीश जटा पर चंदा सोहे। रूप अलौकिक त्रिभुवन मोहे।।
नगरी मुक्ति दायिनी काशी। जिसमें बसें आप अविनाशी।।
जब-जब मुदित होत त्रिपुरारी। देत सबै दुख पल में टारी।।
रीझे राज रचौं भूतल में। खीझें भंग करें इक पल में।।
नीलकंठ प्रिय नाम तुम्हारा। भव सागर का एक अधारा।।
तुमरो मंत्र राम ने गायो। सात समंदर पार लगायो।।
चला जबहि लंकेश लिवाई। माया पति माया फैलाई।।
तृषित दसानन अति अकुलाना। सप्त नदी जल पीय अघाना।।
लघु शंका भई दीरघ काला। समय गए तब भयो निहाला।।





अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क

साहित्य दिग्दर्शिका

प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेबल ट्रस्ट (पंजी०)

श्री शिव-शक्ति चालीसा



सुंदर प्रकृति पूर्ण वन भाया। हिले न रांचहु बहुत हिलाया।।
विनय भगीरथ की स्वीकारीं। मातु गंग निज शीश उतारीं।।
ब्रह्मकमण्डल तजि हुलसायीं। प्रभु शिव शंकर जटा समायीं।।
हर-हर बही धार शुचि धरनी। पाप नाशिनी मंगल करनी।।
बीते युग श्रापित स्वजनन को। तर्पण-मुक्ति मिली पुरखन को।।
पाणिनि कीन्ही साध कठोरा। दिया ज्ञान शुचि अंतस भोरा।।
चुनि-चुनि लिखी अष्ट अध्यायी। संस्कृत ज्ञान ज्योति जग पायी।।
अर्जुन नीलकंठ सुधि लाए। सत्य रूप में दर्शन पाए।।
मन वांछित फल बांटे नीके। सुफलित करम भए सब ही के।।
तीन रूप नित रचे विधाता। पिता सदा शिव दुर्गा माता।।
तृतीय रूप महेश बखाना। दुष्ट सँहारक जिनको जाना।।
करि जप-तप-व्रत-नेम कुमारी। पतिव्रता भई शैलदुलारी।।
दक्ष-सुता जय-जय-जग जननी। असुर निकंदिनि मंगल करनी।।
शंख-चक्र कर गदा विराजे। स्वर्ण मुकुट सिर ऊपर साजे।।
प्रकटीं शक्ति दक्ष के आंगन। रूप अनूप दिव्य मनभावन।।
हरसे मनुज दनुज सकुचाने। बरसे सुमन देव मुस्काने।।
धारण किए मातु नव रूपा। अस्त्र-शस्त्र वर वेश अनूपा।।
विधवा सधवा भजें कुमारी। आदि शक्ति को नाम उचारी।।
काल रूप धरि काली माता। कर गहि खड़ग कियो रिपु घाता।।
जीव-जंतु जब देव पुकारा। महिषासुर,चढि सिंह, सँहारा।।
श्वेत वरन शुभ अंग सुहाए। दर्शन सुर-नर-मुनि-जन पाए।।
अखिल विश्व की तुम ही माता। रिद्धि-सिद्धि सुख संपति दाता।।
प्रभु महिमा जाने सब कोई। शिव सुमिरन से सब सुख होई।।
देव-दैत्य मिलि मंथन कीन्हा। चौदह रत्न उदधि तब दीन्हा।।
अमरित कलश गरुड़ ले धाया। शिव शंकर को मन विष भाया।।
जो धरि ध्यान पढ़े चालीसा। पावै मनुज अमित आसीसा।।
मिले ईश अंतर शुचि नेहा। मन में रहे न कुछ सन्देहा।।

दोहा

उमानाथ कैलाशपति, चरन-कमल सुख धाम।
मातु शक्ति सह उर बसो।आदि देव अभिराम।।



-राजेश कुमार राठौर "राज"
पूरनपुर,पीलीभीत (यूपी)

अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क





साहित्य दिग्दर्शिका

प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेवल ट्रस्ट (पंजी०)



गुलामी की जंजीरों में जब,
कैद थीं भारत मातृ।
जन्म दिया एक लाल को मां ने,
नाम बहादुर शास्त्री....!!

दो अक्टूबर प्रसिद्ध दिवस है
महापुरुषों की है पुजारी
धन्य हैं वो माता इनकी
धन्य हैं इनके पितृ....!
जन्म दिया...............शास्त्री।

है कहानी मुगल सराय की
प्रांत है आगरा नगरी
बिन पिता के पले - बड़े थें
बने देश के मंत्री....!
जन्म दिया..............शास्त्री।

अंग्रेजों को भाग खदेड़ा
मिटी गुलामी की बदरी
बनके उभरे पवित्र धारा पे
जन मानस के भातृ....!!
जन्म दिया................शास्त्री।

गरीब किसान और वीर जवान
इनके थें दो अस्त्री
युद्ध काल में साथ खड़े रह
सिखाई सब को मैत्री....!!
जन्म दिया................शास्त्री।

जनवरी ग्यारह को जब
अंतिम सांस गुजारी
छोड़ सिंहासन लेने आएं
राजा स्वर्ग की नगरी......!!

जन्म दिया एक लाल को मां ने
नाम बहादुर शास्त्री.....!!

संजय कुमार तिवारी
पटना(बिहार)





स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत, शिक्षित भारत, समृद्ध भारत



शुभ नवरात्रि

के पावन अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।



गुरुकुल अखण्ड भारत  ||  917599289803





माता बड़ी प्यारी होती
जग से निराली होती
चरणों में उनके तो
मेरा सुख धाम है

महिमा अपार जहां
जन का आधार वहा
बात बड़ी नेक यह
माँ का बड़ा नाम है

सारे पीर दूर करें
खुशियों से झोली भरे
मां के वरदान से तो
मिलता आराम है

सुमिरन जो भी करे
मां का नित्य ध्यान धरे
भवानी की कृपा से ही
सफल हर काम है



आशा उमेश पांडेय अविरल
सरगुजा छत्तीसगढ़

अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क

शुभ नवरात्री

साहित्य दिग्दर्शिका

प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेबल ट्रस्ट (पंजी०)



माँ सिद्धिदात्री है जग कल्याणी है

सुन्दर,सलोना माँ है रूप तेरा
माँ के चरणों में शीश नवाता हूँ ।
जीवन में खुशियाँ भर देना माँ
मै गीत सदा आपके ही गाता हूँ।।१।।

माता के नवराते प्यारे आये हैं,
सबने घर,मन्दिर,द्वार सजाये हैं
घन्टा,शंख ध्वनि खूब बाजि रही
अति सुन्दर तोरणद्वार सजाये हैं।।२।।

माँ के सारे नौ रूप निराले हैं,
भक्त माँ के रूपों के मतवाले हैं।
पूजन माँ का दिल से करते हैं,
आरती माँ की आठों याम उतारे हैं।।३।।

माँ सिद्धिदात्री है जग कल्याणी है,
माँ कमला है,आदिशक्ति भवानी है।
सुख समृद्धि दाता माँ महालक्ष्मी है,
भक्तों की रक्षक काली खप्पर वाली है।।४।।

विद्या की अधिष्ठात्रि देवी माँ सरस्वती
सब साधकों को ज्ञान बांटती रहती हैं।
माँ दुर्गा तो हैं बहुत दयालु,वो अरदासें
सब भक्तों के क्षण में पूरा करती रहती हैं।।५।।

आपसे माँ बस विनती इतनी करता हूँ ,
चरणों में माता बार बार सिर रखता हूँ।
माता मुझको बस कसकर थामे रहना
मै नहीं आस किसी और की धरता हूँ।।६।।



–श्रीपति रस्तोगी,लखनऊ



मां मेरी मां दुर्गे

मेरी मां दुर्गे बस तुम्हारा ही सहारा है,
सफलता मेरी नहीं करिश्मा तुम्हारा है।

गम के तूफानों में जब
डूबने लगी नैया,
पास आईं किनारा बन के
तुम मेरी मैया।

हाथ थामा है तुमने जब तुम्हें पुकारा है।
मेरी मां दुर्गे बस तुम्हारा ही सहारा है।

राजरानी,भवानी,
शारदे ,कैलारानी,
तुम्ही हो आदि तुम्ही अंत तुम्हीं वरदानी।

दिलाई जीत तुमने अनिल जब भी हारा है।
मेरी मां दुर्गे बस तुम्हारा ही सहारा है।



गीतकार
अनिल भारद्वाज एडवोकेट
हाईकोर्ट ग्वालियर

अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क





आगमी श्राद्ध पक्ष को देखते हुये कौवों की आपत बैठक हुई जिसमें सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि जिस घर में बूढे माता पिता के साथ बुरा व्यवहार होता हो उस घर के अन्न-जल का बहिष्कार किया जायेगा, जो लोग जीवित बुजुर्गों को ढंग से रोटी पानी नही दे सकते वो मरे हुए पितरों को भोग लगाने के काबिल नही हैं

– अनुज प्रताप सिंह सूर्यवंशी
अध्यक्ष/गुरूकुल अखण्ड भारत

शुभ नवरात्री
साहित्य दिग्दर्शिका
प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेबल ट्रस्ट (पंजी०)
अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क



जय जय जय हे सिद्धी विनायक
दुःख हर्ता, मंगल सुखदायक।
प्रथम पूज्य तुम श्री गणेश हो
गौरी तनय सुत महेश हो।
अति प्रिय तुमको मोदक खाना
तेरी बुद्धि का क्या करुं बखाना।
जब हुई सब देवों की इच्छा
ले लिया तुम्हारी बुद्धि परीक्षा।
कहा पृथ्वी परिक्रमा किये
बुद्धिमत्ता का प्रमाण दिजे।
तुमने दिखलाई चतुराई
माता की परिक्रमा लगाई।
धरती और मां एक समान हैं
दोनों की महिमा महान है।
हाथ जोड़ हम करें हैं वंदन
हे गणपति गौरी के नंदन

अमृता राजेन्द्र प्रसाद

डॉ. जमुना कृष्णराज



शिक्षा एम.ए. (हिन्दी एवं अंग्रेजी), पीएच.डी. (हिन्दी), अनुवाद में डिप्लोमा ।

कृतियाँ शब्द संगम, मानव की खोज में, मन की झंकार, तमिलनाडु के स्वतंत्रता सेनानी, मीना, अश्रुपुष्प, मन्नू भंडारी और शिवशंकरी की कहानियों में चित्रित सामाजिक समस्याओं में साम्यताएं, तमिलनाडु के शैवसंत (63 नायनमार), तोंदवाले गणपति, ज़माना बदलेगा, देवी पाठ, सुंदरी का सपना और अन्य कहानियां ।

प्रकाशन दैनिक भास्कर, वीणा, वागर्थ, हंस, हरिगंधा, भाषा, राजभाषा भारती, साहित्य अमृत आदि प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में कविता, कहानी एवं आलेख प्रकाशित ।

उपलब्धियाँ वर्ष 2022 में तमिलनाडु के मुख्य मंत्री से उत्कृष्ट अनुवादक का पुरस्कार, युवा उत्कर्ष साहित्य मंच, नई दिल्ली का सुभद्रा कुमारी चौहान पुरस्कार, कादम्बरी संस्था और विद्योत्तमा फाउन्डेशन द्वारा वर्ष 2022 में पुरस्कृत, आकाशवाणी चेन्नई के इन्द्रधनुष कार्यक्रम में कविता और वार्ता प्रसारित, उत्तर प्रदेश के शिक्षामंत्री द्वारा साहित्येन्दु सम्मान 2019, ग्यारहवें विश्व हिंदी सम्मलेन 2018 मॉरिशस में सरकारी प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य के रूप में सहभागिता, तमिलनाडु हिंदी साहित्य अकादमी द्वारा अनूदित कृति साहित्य सम्मान 2017, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय 2016 का हिंदीतर भाषी हिंदी लेखक पुरस्कार ।

सम्प्रति स्वतंत्र लेखन। सेवा निवृत, बी.एस.एन.एल. चेन्नई ।

संपर्क 39/3, अनुग्रहा अपार्टमेंट्स रामस्वामी गार्डन स्ट्रीट, अरुणाचलपुरम, अडयार, चेन्नई - 600020

दूरभाष 044-24462222, +91-9444400820






अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क

साहित्य दिग्दर्शिका

प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेवल ट्रस्ट (पंजी०)





आज हम माँ की शरण में आयें।।
दीप जलाकर धूप जलाकर
पूजा की थाल सजायें।
ऊँचे पर्वत छटा निराली
है माँ दरबार लगायें।।
आज हम माँ की शरण में आयें।
आज हम.....

नव रूपो वाली तू माता
हम सब महिमा तेरी गायें।
सिंह सवारी माँ तू मेरी
ऊँचे आसन पायें।
आज हम माँ की शरण में आयें।
आज हम.....

तेरे दर पर आकर कोई
खाली हाथ न जायें।
दुष्टों का संघार करें तू
भक्त की लाज बचायें।।
आज हम माँ की शरण में आयें।
आज हम.....
शंख,चक्र और गदा,
पद्‌म कर में त्रिशूल सुहायें।
दानव दल को दलने वाली
है तेरी अष्ट भुजायें।।
आज हम माँ के शरण में आयें।
आज हम.....

इस नव दिन के पावन अवसर
पर हम सब लाभ उठायें।
एक बार प्रेम से भक्तों
मिलकर जयकार लगायें।।
आज हम माँ की शरण में आयें।
आज हम.....

लाल चुनरिया है माँ तेरी
लहर लहर लहराये।
गलती हो अनूप से तो
तू ही रांह दिखायें।।
आज हम माँ के शरण में आयें।
आज हम.....

अनूप "एकलव्य"
बाराबंकी,उत्तर प्रदेश,





अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क

साहित्य दिग्दर्शिका

प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेबल ट्रस्ट (पंजी०)

HAPPY
Maharaja Agrasen
JAYANTI



03 अक्टूबर



लोकनायक, समाजवाद
के अग्रदूत, तपस्वी, महादानी

महाराजा अग्रसेन जी

की जयंती पर
उन्हें सादर नमन।



गुरूकुल अखण्ड भारत




अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क

साहित्य दिग्दर्शिका

प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेवल ट्रस्ट (पंजी०)





तुम ही हो माँ वृषारूढ़ा,
माँ दुर्गा का प्रथम स्वरूप।
आदि शक्ति हो नारी का,
तुम हो ममता का रूप।

प्रजापति ने जब यज्ञ किया,
छोड़ हमारे शिव जी को,
सब देवगढ़ बुलवाये।
माँ सती ने देखा जब पिता के घर,
अनेक देवगढ़ थे आये।

मन सती का प्रबल हो उठा,
शिव जी रोक न पाए।
माँ सती पहुंची जब यज्ञ में,
माँ प्रसूती का मन हर्षाये।

देख सती को पिता और बहिन ने,
व्यंग कर उपहास उड़ाया।
त्तिरष्कार कर शिव जी का भी,
प्रजापति ने खूब अपमान कराया।

पति का अपमान सहन न कर सकी,
खुद को स्वाह कराया।
देख सती को भष्म हुआ,
क्रोध भोले का रुक न पाया।

दारूण दुख में व्यथित हृदय से,
शिव जी ने यज्ञ विध्वंस कराया।
शैल हिमालय के घर पुनर्जन्म दे,
फिर से इतिहास रचाया।

शैल पिता हिमालय के नाम पर ही,
माँ शैल पुत्री कहलायीं।
कर तपस्या शिव जी की,
अर्धांगनी बन फिर आयीं।

विवाह उपरांत पार्वती बन,
ममता बरसाने आयीं।
धर प्रकृति का रूप माँ ,
हमको संभालने आयी

--कंचन मिश्रा



हे मातु शारदे मां तू मुझको सार दे मां।
करुणा का मां अपनी कुछ मुझको प्यार दे मां।

ममता की सागर तू,तू जग की उजागर है।
संसार तुझी से मां,तू जग की कृपाकर है।
तेरी विनती करूं मैया, संसार सार दे मां।
हे मातु शारदे.......f

धरती पर जब जब मां,तू पांव ये धरती है।
दुख दर्द सभी हरती भव पार तू करती है।
वंदन अर्चन तेरा, कुछ धार कलम दे मां।
हे मातु शारदे मां..१

दिनकर ये चमकता है,जब कृपा तेरी होती।
रचनाएँ तब रचता,जब दया तेरी होती।
वंदन मैं करूं हर पल, आशीष मुझे दे मां।
हे मातु शारदे मां...२

पंकज सिंह दिनकर (अर्कवंशी)
लखनऊ उत्तर प्रदेश

अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क





साहित्य दिग्दर्शिका
प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेबल ट्रस्ट (पंजी०)





नवरात्रि पर्व (अश्विन)

भुवाल माता पर आस्था अम्बर हैं ।
यह निश्छल ,अविरल , अपलक है ।
यह सत्यं-शिवं -सुन्दरं क्षेमंकर हैं ।
यह आत्म पथ फलदायी सुखकर है ।
भुवाल माता का स्मरण सदा सुखदायी है ।
भुवाल माता पर आस्था अम्बर हैं ।
जब तक रहता है नील गगन में तारा
तब तक छविमान दिखता लगता प्यारा
जब अपने उच्च स्थान से वह डिग जाता
पाषाण - पिण्ड बन कर पृथ्वी पर आता
कहलाता उल्कापात बहुत दुखकर हैं ।
भुवाल माता पर आस्था अम्बर हैं ।
यदि कोई बात किसी पर थोपी जाती
वैज्ञानिक युग में वह बन्धन कहलाती
पर समझ - समझ कर जो पथ अपनाता नर
उस पर चलना फिर हो कितना ही दुष्कर
स्वेच्छा से स्वीकृत मरना भी सुखकर है
भुवाल माता पर आस्था अम्बर हैं ।
भुवाल माता पर आस्था अटूट किनारा है ।
जिस पर मानव श्रद्धा से विश्वास रखता है ।
भुवाल माता पर आस्था ऐसी अभेद रेखा है
जिसका प्रभाव व्यवहार जगत में देखा है ।
श्रद्धा देती मजबूती का अटूट वर है ।
भुवाल माता पर आस्था अम्बर हैं ।

प्रदीप छाजेड़
(बोरावड़)





अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क

साहित्य दिग्दर्शिका

प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेवल ट्रस्ट (पंजी०)



किरदार हमारा बेबाक है,
सच कहने का ये अभ्यास है।
विराम–चिह्नों की चिंता नहीं,
भाव में बस गहरी बात है।

न बिंदी–फुलस्टॉप का मोह,
न ही अलंकारों का तोह।
सार्थक शब्दों की गठरी संग,
वाक्य हमारा सदा सविनय।

स्वर और व्यंजन साथ हैं चलते,
संयुक्ताक्षर जब सधे हैं मिलते।
लिंग–वचन का ध्यान रहे,
पर भाव से न कभी झुके।
समास का संग जुड़ा रहे,
संधि की धारा बहे बहे।
कारक, काल, वचन, सब साथ,
पर स्वतंत्रता हमारी बात।

बेबाक किरदार जो हम निभाते,
आशाओं की डोरी में बंधे न आते।
पर जब भी बोलें, बात सटीक,
हमारी भाषा में हो रस की टुकड़ी अनोखी,
ठीक!

अनुज प्रताप सिंह सूर्यवंशी
पूरनपुर पीलीभीत (उ०प्र०)





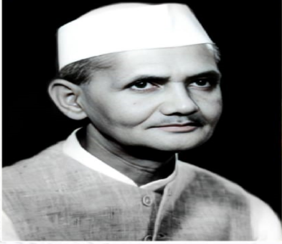
अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क

साहित्य दिग्दर्शिका

प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेबल ट्रस्ट (पंजी०)



स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत, शिक्षित भारत, समृद्ध भारत



"जय जवान जय किसान" के प्रणेता
श्री लाल बहादुर शास्त्री जी
को जयंती पर विनम्र अभिवादन।



गुरुकुल अखण्ड भारत || 917599289803





स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत, शिक्षित भारत, समृद्ध भारत

(1869-1948)
HAPPY
Gandhi
JAYANTI
"Be the change you want to see in the world"



गुरुकुल अखण्ड भारत || 917599289803



दो अक्टूबर अद्भुत अनुपम,
द्वि महापुरुष अवतरण बेला ।
प्रथम अहिंसा परम पुजारी,
द्वितीय सादगी भाव नवेला ।
कोटि कोटि नमन अभिवंदन,
दोऊ सुशोभित भारती अंतरांस ।
द्वि विभूति एक्य जयंती, हिंद पटल हर्षोल्लास ।।

सत्य प्रयोग शांति महत्ता,
बापू जीवन अमिय सार
ईमानदारी सह कर्म निष्ठा,
शास्त्री जी सोच शासन आधार ।
सहज सरल व्यक्तित्व कृतित्व ,
हर कदम राष्ट्र उत्थान प्रयास।
द्वि विभूति एक्य जयंती, हिंद पटल हर्षोल्लास ।।
सत्याग्रह पथ राष्ट्रपिता,
सदैव प्रगाढ़ अंतर्संबंध ।
जनप्रिय लाल बहादुर,
हर कर्तव्य आदर्श बंध ।
स्वतंत्रता आंदोलन संघर्ष,
सविनय अहिंसा सूत्र सुहास ।
द्वि विभूति एक्य जयंती, हिंद पटल हर्षोल्लास ।।

भारत छोड़ो ,करो या मरो,
गांधी जी प्रेरणा पुंज उद्घोष ।
जय जवान जय किसान ,
शास्त्री जी स्नेहिल परितोष ।
प्रात: स्मरणीय विराट छवि,
अहम श्रोत देश धरा उजास ।
द्वि विभूति एक्य जयंती, हिंद पटल हर्षोल्लास ।।

——कुमार महेन्द्र



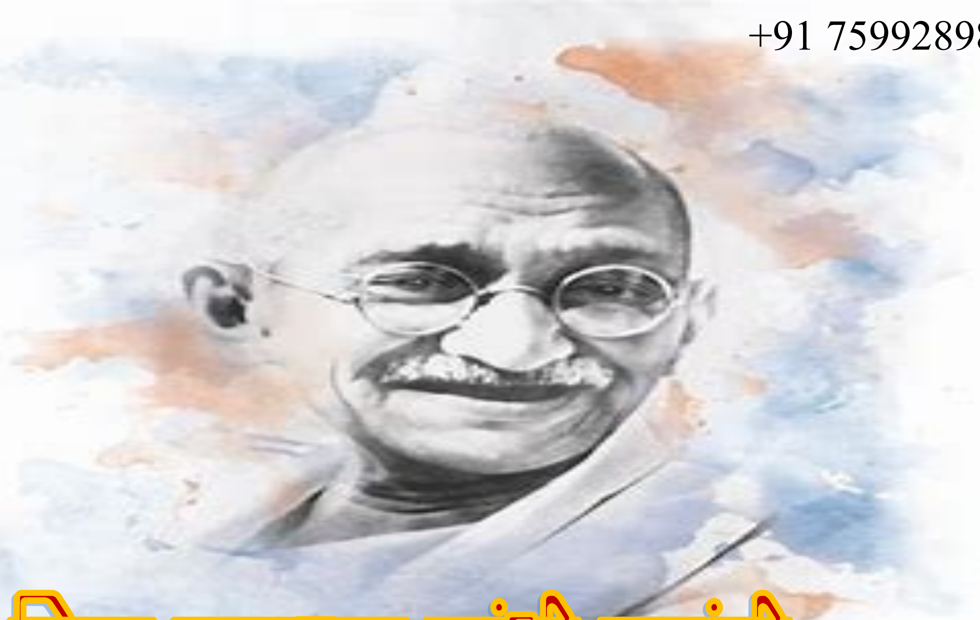

अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क

साहित्य दिग्दर्शिका

प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेबल ट्रस्ट (पंजी०)



+91 7599289803



राष्ट्र पिता महात्मा गांधी जयंती

दो अक्टूबर आइल,
गांधी जयंती छाइल,
जय हो बापू जय हो,
ओ बापू बापू भाइल,
राष्ट्र पिता बापू जी,महान हउवें।
पूरे भारत देशवा के,शान हउवें।।

सत्य, अहिंसा, पुजारी रहले गांधी,
गोरे अंगरेजवन के, झेले उ आंधी,
कई बार जीवन में, गइले उ जेल हो,
तबो नाही मिशन में,भइले उ फेल हो,
सत्याग्रह आन्दोलन छेड़, आगे कदम बढ़ाए,
अंग्रेजो तुम भारत छोड़ो,नारा पे लोग चढ़ाए,
जन जन के प्रेरक बापू, मान हउवें।
पूरे भारत देशवा के, शान हउवें।।

चरखा चला बापू,लाये कपड़े खादी,
अथक परिश्रम कर,दिलाए आजादी,
एकता के सूत्र बांध,रखे सब साथे,
बापू जी के नाम अमर, हो गइले गाथे,
ईश्वर अल्ला एके नाम,ऐसा कहते थे बापू,
धर्म की एकता डोरी में नित,राम नाम का जापू,
के के कारुष बापू,सत्य खान हउवें।
पूरे भारत देशवा के,शान हउवें।।

कमलेश कुमार कारुष




अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क

साहित्य दिग्दर्शिका

प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेवल ट्रस्ट (पंजी०)



बरगद पीपल छाया भाती, नर गुण से अनजान है।
प्राण–वायु से वंचित होते,सचमुच यह नुकसान है।

अमराई फैली गाँवों में,कोयल छेड़े तान है।
नदियाँ झरने गाना गाते,जिनकी अद्भुत शान है।

राम–कृष्ण की धरती अपनी,खेले जँह भगवान है।
गोकुल –रज की पावन महिमा, गाते वेद– पुरान है।

पर्वत जंगल औषधि देते,रत्नों की भरमार है।
प्रकृति सदा लहराती रहती, महिमा अपरम्पार है।

बृक्ष सदा से पूँजे जाते, भारत की पहिचान है।
गंगा छिप्रा सरयू सबके, धोती पाप समान है।

धरती माता सब सुख देती, करती नित उपकार है।
प्राणों से भी प्यारी माता,जिनकी जय –जय कार है।

––बुद्धसेन शर्मा



साहित्य दिग्दर्शिका



अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क

प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेबल ट्रस्ट (पंजी०)




स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत, शिक्षित भारत, समृद्ध भारत



"जय जवान जय किसान" के प्रणेता

श्री लाल बहादुर शास्त्री जी

को जयंती पर विनम्र अभिवादन।




गुरुकुल अखण्ड भारत || 917599289803



भारत मां के लाल का, उस अचानक इंतकाल का, इक अनसुलझा सवाल है।
देश की आवाम को ,सुबह और शाम को, ताशकंद पर आता इक ख़याल है।।
जिससे बनी विकास की धारा है, जो जवानो और किसानो की आंखों का तारा है।
कहे परिंदा घायल, जिसने गर्दिशों में भी दुश्मनों का काट दिया हर जाल है।
वह लाल बहादुर शास्त्री भारत मां का लाल है ।
वह लाल बहादुर शास्त्री भारत मां का लाल है।।

हरेन्द्र विक्रम सिंह गौर
सीतापुर

अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क





साहित्य दिग्दर्शिका

प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेबल ट्रस्ट (पंजी०)



सत् सत् नमन करते हैं हम उनको
जिन्होंने आजादी की जंग लडी
लड़ना झगड़ना कोई बात नहीं
पर जिन्होंने एक अपनी लड़ाई एक नीति के साथ यह जंग लडी
करते हैं नमन उनको जिन्होंने
यह लड़ाई बिना स्वार्थ के लड़ी
हम आज चमन है हम आज मगन है
मसीहों के कुर्बानी के बदौलत
उन मसीहों को आज नमन है
उन मसीहों को आज नमन है
सत्य अहिंसा परमो धर्मरू का मेरा नारा था
था स्वतंत्रता जन्म सिद्ध अधिकार
था आधी रोटी खाएंगे
पर देश का मान नहीं घटाएंगे
था आधी रोटी खाओगे
पर बच्चों को जरूर पढ़ाएंगे
था तुम मुझे खून दो मैं तुमको आजादी दूंगा
था इंकलाब जिंदाबाद
था जय जवान जय किसान
इन नारों ने भारत को ऐसा गढ़ा
आज अपनी भी विश्व में अलग पहचान है
उन आजादी के दीवानों को नमन
जिन्होंने यह नारे दिए हों गए मिट्टी में दफन
उन परवानों को आज है नमन
जिनके कुर्बानियों के दम पर वतन है चमन
राष्ट्र पिता महात्मा गांधी, पंडित लालबहादुर शास्त्री जी को
अर्पित है श्रृद्धा सुमन अर्पित है श्रृद्धा सुमन

——भरत प्रसाद प्रजापति
मध्य प्रदेश





स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत, शिक्षित भारत, समृद्ध भारत



माँ स्कंदमाता

नवरात्री पाँचवा दिन



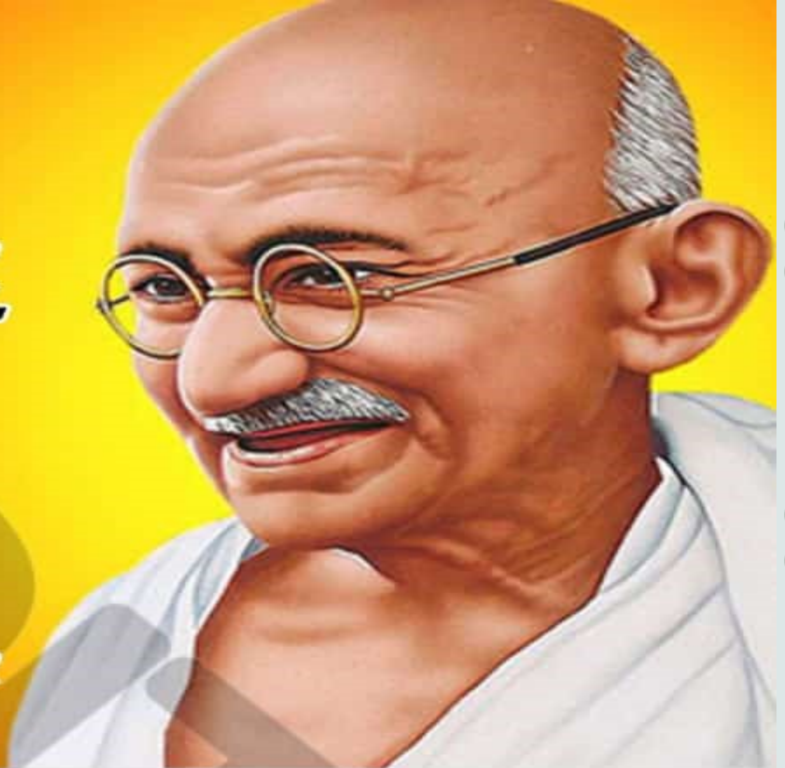
गुरूकुल अखण्ड भारत || 917599289803



सिंहासनगता नित्यं पद्माश्रितकरद्वया।
शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी॥

दो पसली का वो इंसान,
बिन हाथों में तीर कमान,
ना ही कोई गोली बंदूक,
ना ही कोई खतरनाक लुक,
फिर भी ऐसा खौफ मचाया,
अंग्रेजों को दूर भगाया,
दो पसली का वो इंसान,
बिन हाथों में तीर कमान,
गांधी बापू तुम्हें प्रणाम।।

– आदित्य कुमार
(बाल कवि)



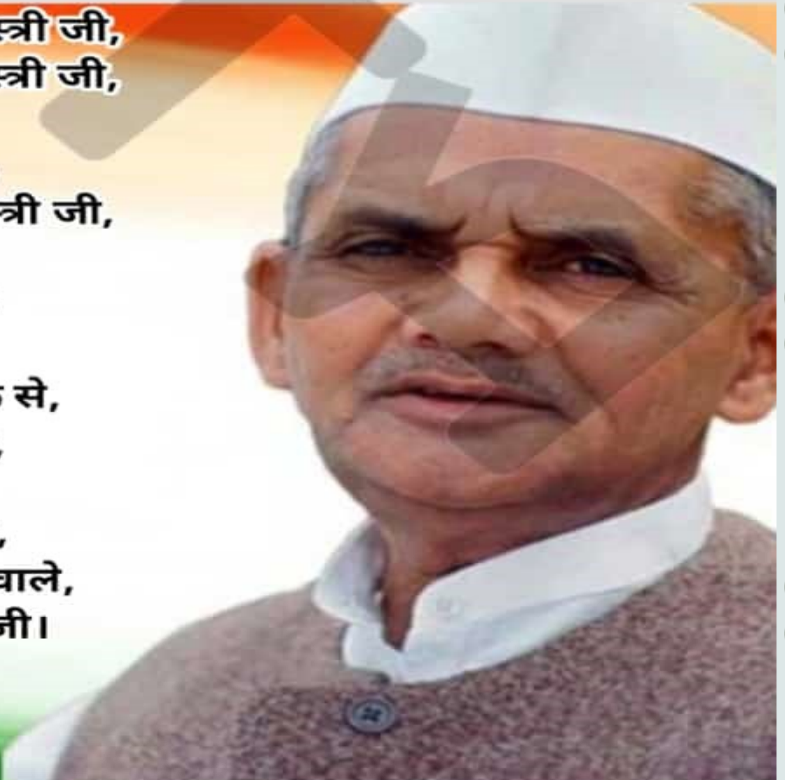
राष्ट्र को कृषि का रस पिलाने वाले शास्त्री जी,
राष्ट्र को रोटी का हक दिलाने वाले शास्त्री जी,

देश को बनाने में वो व्यस्त ऐसे हो गए,
अपने लिए घर कभी बना ना सके शास्त्री जी,

धमकी दिया जब यूएसए ने हमको कि
गेंहू भारत को अब एक नही भेजेंगे,
तब कहा था शास्त्री जी ने देश के तरफ से,
एक सांझ की रोटी खाकर हम रह लेंगे,

ऐसा बेबाक जिगर रखते थे शास्त्री जी,
जय जवान जय किसान का नारा देने वाले,
राष्ट्र के प्रति सजग वो रहते थे शास्त्री जी।

– आदित्य कुमार
(बाल कवि)







पिता-पुत्र संवाद

जिनके यौवन के बहानो की बातें झूठी - मुठी रहती हैं
उनसे उनकी किस्मत अक्सर रूठी - रूठी रहती है
जब किस्मत रूठी रहती है तो हर कोई गैर हो जाता है
गैरों की तो बात ही छोड़ो अपनों से भी बैर हो जाता है
अपनों से बैर होने लगता है तो मन भी खिन्न हो जाता है
मन के खिन्न होने से खुद ही खुद से अनबन हो जाता है
जीवन में होने वाले इस अनबन से तुम्हें बचाना चाहता हूँ
मेरे बेटे,मैं दुनियाँ के हर भटकन से तुम्हें बचाना चाहता हूँ

–राघवेन्द्र

अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क





साहित्य दिग्दर्शिका
प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेवल ट्रस्ट (पंजी०)



प्रीति का नीति से कौन अनुबन्ध है,
नीर का मीन से कौन सम्बन्ध है ?
श्रोत पीयूष बहता जहाँ हो अथक,
आचमन पर नहीं कोई प्रतिबन्ध है।

तुम निशा में कहो कौन अनुबन्ध है,
ज्योति का प्रात से कौन सम्बन्ध है?
रात भर रात रानी गमकती रहे-
इस प्रहर का न उस पर प्रतिबन्ध है।

दाह का अग्नि से कौन अनुबन्ध है,
स्नेह का दीप से कौन सम्बन्ध है?
आज मिल लूँ गले सोचता है शलभ,
वर्तिका से मिलन पर न प्रतिबन्ध है।

हास का पुष्प से कौन अनुबन्ध है,
अलिकली का कहो कौन सम्बन्ध है?
आज बाहों में आओ है कहती सुमन,
मद भरे चुम्बनों पर न प्रतिबन्ध है ।

श्वाँस का प्राण से कौन अनुबन्ध है,
रवि किरन का कहो कौन सम्बन्ध है?
भावना के डगर पर न भटको प्रिये,
दो हृदय के मिलन पर न प्रतिबन्ध है।

चन्द्रगुप्त प्रसाद वर्मा ''अकिंचन''
गोरखपुर

अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क





साहित्य दिग्दर्शिका

प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेबल ट्रस्ट (पंजी०)

ॐ देवी ब्रह्मचारिण्यै नमः





स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत, शिक्षित भारत, समृद्ध भारत



ब्रह्मचारिणी माँ

ब्रह्म का अर्थ है तपस्या और चारिणी यानी आचरण करने वाली।
इस प्रकार ब्रह्मचारिणी का अर्थ हुआ तप का आचरण करने वाली।



गुरूकुल अखण्ड भारत || 📞 917599289803





महिमामयी माँ की छबि न्यारी ।
मेरी माँ है सबसे प्यारी ।।
माँ की थपकी, मीठी लोरी ।
स्नेह-बंधनकीपवित्रहैडोरी ।।

नन्हा जीवन की किलकारी।
बार-बार जब माँ पुचकारी ।।
माँ देती दूध भरी कटोरी।
मेरी माँ गंगा -गोदावरी।।

धन्य माँ है मेरी कुलेश्वरी।
मेरी माँ है पुष्प मौलसिरी ।।
माँ दौड़आतीसुन सिसकारी।
माँ -माँकहकेजबभीपुकारी।।

माँ बिन अनाथ है दुनिया सारी ।
जगत-जननी गौरव-पदभारी।
मातृत्व से जब बंचित नारी।
वह नारी है आधी -अधूरी ।।

माँ ममता की भरी तिजोरी।
माँ की चाह पूत बने संस्कारी।।
महिमामयी माँ की छबि न्यारी
मेरी माँ है सबसे प्यारी ।।



डा० उमाशंकर सिंह
"सुमन"
जहानाबाद।

यह बात हमेशा याद रखना
सिर्फ दुनिया को दिखाने के
लिये अच्छा बनना बुरे बनने
से भी बुरा है



दिखावा

नवरात्रि में कन्याओं को बांटने के लिए हेमा केले खरीद रही थी , कि तभी दो गंदी सी झोपड़पट्टी की लड़कियां आई। मैडम हमें भूख लगी है, हमें केले दे दो ना। लेकिन हेमा ने उन्हें डांटकर भगा दिया। जाने कहां से मुंह उठा कर चले आते हैं और सारा दिन खराब कर देते हैं। जाओ, यहाँ से। तभी फलों की दुकान वाला बोला मैडम और क्या चाहिए? हां भैया 1 किलो सेब भी दे दो। कितने रुपये हुए? मैडम ढाई सौ रुपए। अभी पेटीएम करती हूं। फल वाला बोला, जी मैडम ।आपने इतने केले लिए हैं तो आपके घर में बहुत सारे लोग होंगे ना या व्रत करते होंगे । नहीं भैया गरबा पांडाल में लड़कियों को आज केले बांटना है इसलिए इतने केले लिए हैं। हेमा फलों को कार में रख चलती बनी।

तभी एक साधारण सी महिला आई और एक दर्जन केले खरीदने लगी। इतने में वह लड़कियां फिर आई। वह ललचाई नजरों से केलों की तरफ देख रही थी। तभी उस महिला ने उनमें से केले निकाल कर एक-एक केला दे दिया। यह लो बेटा वैसे भी मैं लड़कियों को बांटने के लिए ही है ले रही हूं। फल वाला बोला बहन जी लोगों के पास जितना ज्यादा पैसा होता है। उनका दिल उतना छोटा होता है। दान करेंगे, लेकिन दिखावे के लिए करते हैं । जिन गरीब बच्चों को भूख लगी होती है। उन्हें कोई नहीं देता। अभी-अभी एक बड़े घर की मैडम कार लेकर आई थी और दो दर्जन केले लेकर गई लेकिन बेचारी गरीब लड़कियों ने मांगा तो उन्हें एक केला भी नहीं दिया और उन्हें डांट कर भगा दिया। सही बात है भैया, आजकल दिखावे का ही तो जमाना है।

शीला बड़ोदिया
इंदौर



साहित्य दिग्दर्शिका



अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क

प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेवल ट्रस्ट (पंजी०)

ह्रीं क्लीं ऐं सिद्धये नमः।

माँ सिद्धिदात्री का पूजन मंत्रः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सिद्धिदात्र्यै नमः।

या देवी सर्वभूतेषु माँ सिद्धिदात्री रूपेण संस्थिता।

GURUKUL AKHAND BHARAT

स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत, शिक्षित भारत, समृद्ध भारत

माँ सिद्धिदात्री

नवरात्री नौवाँ दिन

गुरुकुल अखण्ड भारत || 917599289803

शुभ नवरात्रि



अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क

साहित्य दिग्दर्शिका

प्रस्तुति : गुरूकुल अखण्ड भारत चैरिटेबल ट्रस्ट (पंजी०)



हे जगदंबे खोल द्वार

हे जगदंबे खोल द्वार,
करबद्ध निवेदन करते हैं।
मेरे मन रमे मेरे तन रमे,
प्रतिबिंब सदा मन धरते हैं।।

सरिता के सजल घाट,
सभी मन को भाया।
यहां जोगी जती का,
नजारा है छाया।
कल कल बहता जल,
पल पल भरते हैं।
चढ़ा जगदंबे अंबे,
जय जय करते हैं।
घंटे बजे जयकारे लगे,
जय जगदंबे,जश मनते हैं।
मेरे मन रमे मेरे तन रमे,
प्रतिबिंब सदा मन धरते हैं।

चम चम चमक रहा,
चांद जैसे चुनरी।
फहरे पताका फर फर,
सोहे कर में मुनरी।
जुटा हवे भीड़ भाड़,
माई के दुअरिया।
खड़े खड़े करते पूजा,
मिलि सब पुजरिया।
ढोल ढमकते डमरू डमकते,
नाने नगाड़े बजते हैं।
मेरे मन रमे मेरे तन रमे,
प्रतिबिंब सदा मन धरते हैं।

गुन गुन भजन कीर्तन,
गाने अति बजते।
चुन चुन माला फूल,
जगदंबे चढ़ते।
खन खन खनक सिक्के,
चढ़े दान पेटिया।
आते चढ़ावे कलश,
भरि जल मेटिया।
कारुष जी आये,गीत गुनगुनाए,
महिमा कलम से रचते हैं।
मेरे मन रमे मेरे तन रमे,
प्रतिबिंब सदा मन धरते हैं।

कमलेश कुमार कारुष
मिर्जापुर





‘‘न्याय के प्रहरी’’

कानून की किताबें हाथों में थामे,
सत्य और न्याय के लिए कदम बढ़ाए,
निष्ठा का दीप जलाए मन में,
अंधेरों में भी उजियारे को पाए।

हर शब्द, हर धार, हर नियम का ज्ञान,
न्याय का हो बस यही प्रमाण।
झूठ की दीवारें तोड़ते हम,
सच के रास्ते पर कदम बढ़ाते हम।

वकील हूं मैं, न्याय का सेवक,
सत्य का मित्र, असत्य का बेदखल।
वहां खड़ा हूं जहां अन्याय कांपे,
सच की आवाज़ को न कभी झूठ थामे।

मुकद्दमों की गलियों में लड़ता हूं मैं,
अन्याय के अंधकार से भिड़ता हूं मैं।
हर फैसले में निखरता है कर्म,
मेरी निष्ठा का है यही धर्म।

न्याय की देवी के हाथों में तराजू,
उसके संग चलने की मैंने ठानी है।
निष्ठावान हूं मैं, कानून का रक्षक,
सत्य के मार्ग पर हर दिन की जंग मेरी कहानी है।

विपेन्द्र कुमार मिश्र ‘‘एड०’’
तहसील परिसर, पूरनपुर, पीलीभीत

अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क





साहित्य दिग्दर्शिका

प्रस्तुति : गुरुकुल अखण्ड भारत चैरिटेबल ट्रस्ट (पंजी०)

''अखंड भारत का स्वप्न''

अखंड भारत, जहां वेद गूंजते,
जहां गंगा की धारा हर दिल को छूते।
जहां हिमालय की ऊँचाइयों से स्वाभिमान झलके,
वह भूमि है, जहां ऋषि-मुनि सत्य का दीप जलाएं।

सनातन संस्कृति का वह अनमोल धरोहर,
जिसमें बसी है मानवता की अमर ज्योति।
हिंद, सिंधु, आर्यव्रत का है वह स्वर,
जो हर दिल में जगाता शांति की प्रेरणा।

राम, कृष्ण, बुद्ध की वो धरती महान,
जहां हर धर्म का हो सम्मान।
योग और ध्यान के पथ पर चले सब,
जिसमें बसा हो समता का अमर कलश।

सत्य, अहिंसा, प्रेम का हो संदेश,
जहां हर मनुष्य हो एक समान।
अखंड भारत का हो स्वप्न सजीव,
जिसमें बसी हो सदियों की सभ्यता, अद्वितीय।

हिंद महासागर से हिमालय के चरणों तक,
फैले प्रेम और भाईचारे का संदेश।
सनातन के सिद्धांतों से सजी वो भूमि,
अखंड भारत का हर कदम हो स्वर्णिम।

न जात-पात, न भेदभाव का बंधन,
बस मानवता की हो वहां पहचान।
धर्म, संस्कृति, और भाषा की विविधता,
फिर भी एक हो अखंडता का पथ अनमोल।

--अनुज प्रताप सिह सूर्यवंशी





अंक : ०२
सितम्बर २०२४
मूल्य : निःशुल्क

“भारत माता वंदना”

हे भारत माता, वंदन तुझे हमारा,
तेरे चरणों में है सुख सारा।
तू है शक्ति, तू ही है ज्ञान,
तेरे आंचल में बसा स्वाभिमान।

हिमालय तेरी शान है ऊँची,
गंगा–यमुना का पावन जल।
तेरे वन, तेरे खेत–खलिहान,
सबसे है जुड़ा हमारा तन–मन।

तूने दिया हमें वीरों का देश,
जहां हर जन में है देशप्रेम की रे
ख।
राम, कृष्ण, गौतम, शिवाजी की
भूमि,
तेरी महिमा अमर, तेरी गाथा
अनंती।

तेरे मंदिरों में है धर्म का दीप,
तेरी गलियों में गूंजे संगीत।
योग की भूमि, तप का संदेश,
हर मन में बसा तेरा प्रेम असीम।

हे भारत माता, हम तेरे वंदन करें,
तेरे मान–सम्मान में हम जीवन धरें।
तेरी रक्षा में अर्पित हो जीवन,
तू ही है हमारी धड़कन, तू ही है
हमारा जन–गण।

हे भारत माता, कर जोड़कर प्रणाम,
तेरे चरणों में अर्पित हर काम।
तेरा हर कोना, तेरा हर कण,
हमारे लिए है स्वर्ग सा धन।

जय हो, जय हो, भारत के नारे,
तेरे लिए हम सब कुछ वारे।
हे भारत माता, वंदन तुझे हमारा,
तू ही है जीवन, तू ही है सहारा।





Charity & Donation



धन्यवाद



GURUKUL AKHAND BHARAT

(A Charitable Trust Reg. Under Govt. of India)

E-Mail : info.gurukulakhandbharat@gmail.com

H/O : Ho. 23, Vill Sapaha, Post-Sondha, Puranpur, Pilibhit U.P. (242123)

GST : 09AAETG4123A1Z7

Paytm
Accepted Here

Scan & Pay



UPI ID: paytmqr1piqaz47n3@paytm

BHIM UPI




Paytm UPI

GURUKUL AKHAND BHARA.

7599289803